गोरखा राइफल

प्रथम गोरखा राइफल – प्रथम गोरखा राइफल का इतिहास फौजी अभियानों एवं युद्धों की रोमांचक दास्तान है। 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में, नेपाल के गोरखाओं ने अपने साम्राज्य का विस्तार कुमाऊं, गढ़वाल और कांगड़ा घाटी तक फैला दिया था। इसके परिणामस्वरूप, उनका टकराव ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से हुआ, जोकि 1815 के गोरखा युद्ध के रूप में परिणत हुआ। गोरखाओं के युद्ध–कौशल से अंग्रेज काफी प्रभावित हुए। ईस्ट इंडिया कंपनी ने सिगौली की संधि के पश्चात अमर सिंह थापा की शेष बची फौज में से गोरखा रेजिमेंट की स्थापना का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार, 24 अप्रैल, 1815 को सुबाथू, जहां फिलहाल 14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र स्थित है, में प्रथम नूसेरी (अर्थात् मित्रवत अथवा वफादार) बटालियन की स्थापना हुई।

इसके तत्काल बाद ही, रेजिमेंट ने अपने शौर्य की शानदार गाथा लिखनी प्रारंभ कर दी और वर्ष 1826 में "भरतपुर" का पहला युद्ध अलंकरण प्राप्त किया। 1850 में इस रेजिमेंट को नियमित रेजिमेंट का दर्जा प्रदान कर दिया गया और इसका नामकरण "66 गोरखा रेजिमेंट" के रूप में किया गया। इस रेजिमेंट के लेफ्टिनेंट जे. ए. टाइटलर ने फरवरी,1858 में हल्द्वानी के युद्ध में असाधारण वीरता के लिए प्रथम विक्टोरिया क्रॉस अर्जित किया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, इस रेजिमेंट के बहादुर फौजियों ने फ्रांस, बेल्जियम, मेसोपोटामिया (इराक) तथा फिलीस्तीन में हुई जंगों में अपने जौहर दिखाए। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, इस रेजिमेंट की सभी बटालियनों ने बर्मा के मोर्चे पर जंग लड़ी। विगत वर्षों के दौरान, इस रेजिमेंट के नाम में कई बार परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता से ठीक पहले इसका नाम "द फर्स्ट किंग जॉर्ज पंचम ऑन गोरखा राइफल्स (मलाऊं रेजिमेंट)" था। आजादी के बाद रेजिमेंट का नाम पुनः बदलकर "प्रथम गोरखा राइफल" कर दिया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद, इस रेजिमेंट के वीर जवानों ने 1948 में जम्मू व कश्मीर में की गई फौजी कार्रवाइयों में अपना लोहा मनवाया। कोंगो में इस रेजिमेंट की तृतीय बटालियन को वीरता का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया गया। इस बटालियन के कैप्टन जी.एस. सलारिया को असाधारण वीरता का प्रदर्शन करने के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र प्रदान किया गया। हाल के समय में, इस रेजिमेंट ने श्रीलंका, पंजाब और सियाचिन में हुई कार्रवाइयों में विशिष्ट प्रदर्शन किया। आतंकवाद विरोधी कार्रवाइयों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने के लिए इस रेजिमेंट की द्वितीय और पांचवीं बटालियनों को सेनाध्यक्ष (सीओएएस) यूनिट प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया। ऑपरेशन रक्षक के दौरान शानदार प्रदर्शन के लिए इस रेजिमेंट की चौथी बटालियन को सेनाध्यक्ष का प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

गोरखा रेजिमेंट की उक्त 5 बटालियनों के अतिरिक्त, 15 राष्ट्रीय राइफल (जोकि प्रथम एवं चतुर्थ गोरखा राइफल के सैन्य कर्मियों से बनी है) ने आतंकवाद का सामना करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। 1994 में अपनी स्थापना के बाद से इस बटालियन ने 7 शौर्य चक्र, 50 सेना मेडल और वर्ष 2001, 2004 और 2006 में कुल तीन बार सेनाध्यक्ष यूनिट प्रशस्ति–पत्र प्राप्त किए हैं। कुल मिलाकर इस रेजिमेंट को इसकी स्थापना के बाद से अब तक 31 युद्ध अलंकरण और 5 थियेटर अलंकरण प्रदान किए जा चुके हैं।

तृतीय गोरखा राइफल –तृतीय गोरखा राइफल की स्थापना 24 अप्रैल, 1815 को सर रॉबर्ट कॉल्कुहोउन द्वारा कुमाऊं स्थानीय बटालियन के रूप में की गई। इस बटालियन में गोरखा जवानों के अतिरिक्त कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्रों के कर्मियों को भी शामिल किया गया था।

विश्व युद्ध से पूर्व के दौर में, प्रथम तथा द्वितीय बटालियनों ने अफगान युद्ध, तिराह और पंजाब की सरहदों पर युद्ध किया। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, इस रेजिमेंट ने मध्य–पूर्व, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप और बर्मा के अभियानों में सक्रिय रूप से भागीदारी की और अनेक वीरता पुरस्कार और युद्ध अलंकरण अर्जित किए। इस रेजिमेंट की द्वितीय बटालियन के राइफलमैन कुलबीर थापा और राइफलमैन करण बहादुर राणा को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान विक्टोरिया क्रॉस प्रदान किया गया।

वीर सैनिकों वाली द्वितीय बटालियन को 1948 में उरी सेक्टर में युद्ध सम्मान "पीरकंठी" से अलंकृत किया गया जबकि इस रेजिमेंट की पांचवी बटालियन को 1971 में कारगिल सेक्टर में "शिंगो रिवर वैली" पुरस्कार प्रदान किया गया। 1/3 गोरखा राइफल के कर्नल जे.आर. चिटनिस को 1956 में नागालैंड में हुई कार्रवाई के दौरान बहादुरी का प्रदर्शन करने के लिए मरणोपरांत, भारत का सर्वोच्च शांतिकालीन सम्मान "अशोक चक्र" प्रदान किया गया।

इस रेजिमेंट ने एडवेंचर और खोजी अभियानों के दौरान भी बेहतरीन प्रदर्शन किया है। इस रेजिमेंट की पांचवी बटालियन के कीर्ति चक्र, सेना मेडल एवं बार, विशिष्ट सेवा मेडल और आईएमएफ (भारतीय पर्वतारोहण प्रतिष्ठान) के स्वर्ण पदक विजेता सूबेदार एन.डी. शेरपा ने सेना पर्वतारोहण अभियान के सदस्य के रूप में 1977 में कंचनजंगा की चोटी पर विजय पताका लहराई। अरूणाचल प्रदेश के दुर्गम पूर्वोत्तर क्षेत्रों में खोज तथा मानचित्रण की दिशा में असाधारण उपलब्धि के लिए इस रेजिमेंट की चौथी बटालियन के कैप्टन रविन्द्र मिश्रा और सूबेदार बल बहादुर पुन को 1976 में मेक ग्रेगर रजत पदक प्रदान किया गया।

1999 में ऑपरेशन विजय के दौरान, 1/3, 3/3, 4/3 और 5/3 गोरखा राइफल (गोरखा राइफल की प्रथम, तृतीय, चतुर्थ और पंचम बटालियन) ने कारगिल, द्रास और बटालिक सेक्टर में हुए युद्धों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और इस जंग में शानदार प्रदर्शन के लिए 3/3 गोरखा राइफल को जनरल अफसर कमांडिग–इन–चीफ (जीओसी–इन–सी) का प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया।

डाक विभाग, प्रथम गोरखा राइफल तथा तृतीय गोरखा राइफल पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण	:	नीनू गुप्ता

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा x 2 500 p x 2
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	: :	6 लाख प्रत्येक 0.6 Million each
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00